INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

दक्षेस की नेतृत्वकारी भूमिका और संवाद से दक्षिण एशिया में शांति

1- डॉ. उत्तम कुमार 2 डॉ. संदीप भट्ट

1- डॉ. उत्तम कुमार, सह. प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय कैराना, शामली, उ.प्र.

2- डॉ. संदीप भट्ट वरिष्ठ सहा. प्राध्यापक, विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग, एमसीयू, भोपाल, म.प्र.

सारांश

दक्षिण एशियाई देशों में सार्क या दक्षेस (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) एक महत्वपूर्ण संगठन है। सार्क, दक्षिण एशिया के देशों के बीच सामाजिक.आर्थिक विकास, शांति, स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित क्षेत्रीय संगठन है। इस संगठन की स्थापना 8 दिसंबर1985 को ढाका में हुई थी।सार्क के सदस्यों में भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और अफगानिस्तान शामिल हैं। इस संगठन के सभी देश अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशिष्टताओं में एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय स्तर पर पारस्परिक विकास,सहयोग और विश्वास निर्माण को प्रोत्साहित करना है। किसी भी संगठन में संचार उसकी जीवनरेखा कही जा सकती है। संचार एक किस्म में किसी भी संघ के लिए वह गोंद है जो संगठन के सभी तत्वों को एक साथ जोड़े रखता है। यही नहीं सतत संचार और संवाद से ही संगठन के सभी अंग और प्रकल्प संगठन के निर्धारित लक्ष्यों की ओर बढ़ने में सक्षम हो पाते हैं। सार्क संगठन का मुख्य लक्ष्य दुनियाभर के सर्वाधिक आबादी वाले दक्षिण एशियाई क्षेत्र को विकास की राह पर आगे बढ़ाना रहा है। सार्क का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य क्षेत्रीय आर्थिक एकता को मजबूत रहा है। इसके लिए सदस्य देशों के मध्य कई तरह के समझौते हुए हैं ताकि इन देशों के बीच सहयोग और व्यापार को आसान बनाया जा सके। इसके अलावा सार्क क्षेत्र में इस संगठन ने क्षेत्रीय विकास परियोजनाओं, औद्योगिक क्षेत्र में सहयोग प्रदान करना, ऊर्जा परियोजनाओं में साझेदारी बढ़ाने के साथ ही परिवहन और संचार क्षेत्रों में अनेक विकास कार्यक्रमों की शुरूआत की है। यह शोध प्रबंधन की दृष्टि से संगठन के सिद्धांत पर आधारित है। संगठन में संचार की अवधारणाओं पर केंद्रित यह शोध सार्क की विविध इकाईयों के द्वारा प्रतिपादित संचार के प्रयासों के विश्लेषण पर आधारित है। यह इस संगठन की संचार की प्रक्रिया को समझने का प्रयत्न है जिससे यह संपूर्ण क्षेत्र में सूचनाओं का संचरण करता है। यह शोध गुणात्मक प्रविधि का है।

कीवर्डसः संचार, संगठन, जनसपंर्क द्विचरणीय प्रवाह, ऐजेंडा सेटिंग

प्रस्तावना

सार्क अपनी स्थापना के 40 वर्ष पूर्ण कर चुका है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन या दक्षेस दुनिया के सबसे बड़े संगठनों में से एक है। आबादी के लिहाज से देखें तो सार्क देशों में दुनिया की लगभग 22 प्रतिशत आबादी निवास करती है। दरअसल सार्क या दक्षेस देशों एक विशिष्टताओं से भरा भौगोलिक क्षेत्र है। इसका अपना महत्व है। अधिकतर सार्क देश भौगोलिक या समुद्री सीमाएं साझा करते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य है कि अनेक सार्क देशों का साझा इतिहास है। इनकी सामाजिकए आर्थिक और राजनैतिक संस्कृतियां भी

एक जैसी हैं। इसीलिए इस इलाके में आपसी सहयोग की अपेक्षाओं के साथ सार्क की स्थापना हुई।8 दिसंबर1985 में सार्क की स्थापना के बाद से ही इस वैश्विक संगठन का अब तक का इतिहास बहुत अच्छा रहा है। सार्क ने सदस्य देशों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ाने की दिश में कई अहम काम किए हैं। दक्षेस ने अपने क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, बाल कल्याण, खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में अनेकों संयुक्त कार्यक्रम चलाए हैं। इस दृष्टि से देखें तो सार्क ने दक्षिण एशिया क्षेत्र में आर्थिक संवाद स्थापित करने में अहम भूमिका का निर्वाह किया है। सार्क देशों की शिखर बैठकों में इसके सदस्य देशों के नेताओं द्वारा जिन मुद्दों पर चर्चा की जाती है या जिन विषयों को प्रमुखता से रखा जाता है, वे कहीं न कहीं ऐजेंडा तय करते हैं। मीडिया चाहे वह स्थानीय हो या वैश्विक, इन विषयों को प्रमुखता देते हैं। इस तरह सार्क बैठकों में किया गया आपसी संवाद, या ऐजेंडा पर बातचीत मीडिया में मुख्य स्थान लेती है। यह प्रकिया संचार के ऐजेंडा सेटिंग सिद्धांत की प्रतिपुष्टि करती है।

बीते कुछ वर्षों से समूचे दक्षिण एशियाई क्षेत्र के मुल्कों के आपसी संबंध उतार.चढ़ावों भरे रहे हैं। भारत–पाकिस्तान ही नहीं बल्कि भारत नेपाल, बांग्लादेश और भारत, श्रीलंका, अफगानिस्तान आदि देशों के रिश्तों में तनाव वाली परिस्थितियां बनती रही हैं। हलांकि अब तक समूचे दक्षिण एशिया क्षेत्र में आपसी सहयोग स्थापित करने में सार्क की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सदस्य देशों के बीच आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने, तकनीकी सहयोग तथा सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान.प्रदान के लिए सार्क के प्रयास उल्लेखनीय रहे हैं। इस दृष्टि से महज अपने साढ़े तीन दशक के समय में दक्षेस की उपलब्धियां तारीफ के काबिल हैं। सतत प्रयासों से अपने सदस्य देषों के बीच संवाद का एक सेतु स्थापित कर परस्पर सहयोग को बढ़ावा देने की दिषा में सार्क काफी आगे बढ़ा है। कई सदस्य देषों के बीच बेहतर राजनयिक संबंध बनाने में दक्षेस का प्रदर्षन संतोषजनक रहा है। लेकिन दूसरे सहयोगी संगठनों की तुलना सार्क और इसके लक्षित क्षेत्र की चुनौतियों से करें तो हम पाते हैं कि दक्षिण एषियाई क्षेत्र में फैले तनाव को कम करने और आपसी संबंधों को प्रगाढ़ करने में सार्क को अभी बहुत लंबी दूरी तय करनी है।

साहित्य का अध्ययन

दक्षिण एषियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) दक्षिण एषियाई देषों का एक संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1985 में हुई। दक्षिण एषियाई देषों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग स्थापित कर विकास पर बल देने के लिये इस संगठन की स्थापना की गई। एक तरह से कहा जा सकता है कि सार्क सामूहिक रूप से दक्षिण एषियाई मुल्कों में आत्मनिर्भरता और परस्पर सहयोग स्थापित करने के लिए सर्मपित एक संगठन है। भारत, बंग्लादेष, भूटान, मालद्वीप, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, और श्रीलंका इसके सदस्य देष हैं। वर्ष 2005 में आयोजित हुए 13 वें वार्षिक शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान सार्क का सबसे नया सदस्य बना। इसका मुख्यालय नेपाल की राजधानी काठमाण्डू, स्थित है। सार्क अपने क्षेत्र में कृषि, संस्कृति व खेल, स्वास्थ्य, षिक्षा, महिला एवं बाल कल्याण, पर्यावरण, ग्रामीण विकास, पर्यटन, परिवहन, विज्ञान व प्रौद्योगिकी आदि विविध क्षेत्रों में कार्य करता है। वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया चीन, यूरोपियन यूनियन, ईरान, जापान, रिपब्लिक ऑफ कोरिया, मॉरीशस, म्याँमार और संयुक्त राज्य अमेरिका सार्क के पर्यवेक्षक हैं।

सार्क की अवधारणा को सर्वप्रथम बंग्लादेष के राष्ट्रपति जनरल जिया–उर–रहमान द्वारा 1977 में अपनाया गया। 1970 के दषक के दौरान सार्क देष देरी से दक्षिण एषियाई देषों के एक साझे संगठन के निर्माण के लिये सहमत हुये। दक्षिण एषिया में सहयोग का विचार फिर से मई 1980 में रखा गया था। कुल सात देषों के विदेष सचिवों ने 1981 में कोलम्बों में पहली बार मुलाकात की। इसकी सम्पूर्ण समिति ने 1985 में कोलम्बो में क्षेत्रीय सहयोग के 5 व्यापाक क्षेत्रों की पहचान कर उस दिषा में सहयोग की सहमतियां दीं।

बाद के वर्षों में इसमें सहयोग के नये क्षेत्र को जोड़ा गया। सार्क के संदर्भ में सबसे बड़ा कदम 7 और 8 दिसम्बर 1985 को बंग्लादेष राजधानी ढाका में सार्क के प्रथम षिखर सम्मेलन में उठा जिसमें सात देषों में प्रमुखों ने इसे दक्षेस ''दक्षिण एषिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन'' का नाम दिया। 16 जनवरी 1987 को काठमाण्डू में नेपाल के तत्कालीन राजा वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह द्वारा सार्क सचिवालय का उद्घाटन किया गया। संगठन का संचालन सदस्य देषों के मंत्रिपरिषद् द्वारा नियुक्त महासचिव करते है, जिसकी नियुक्ति तीन साल के लिए देषों की वर्णमाला क्रम के अनुसार की जाती है।

किसी भी संगठन के कुछ बुनियादी सिद्धांत होते हैं। जिनमें उद्देष्यों की स्पष्टता, समन्वय, विकेंद्रीकरण, नियंत्रण आदि प्रमुख होते हैं। प्रबंधन की दृष्टि से ये सूत्र और सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण हैं। किसीह एक संगठन के भीतर संचार की सहायता से इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सतत प्रयास किये जाते हैं। सार्क भी अपनी विविध इकायों के जरिये इस दिषा में दक्षिण एषिया के इलाके में अपने घोषित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिषा में पिछले तीन दषकों में प्रयासरत रहा है।

विष्लेषण

सार्क की विदेष मंत्री स्तरीय प्रथम बैठक में इसके केंद्रीय उद्देष्य क्षेत्रीय सहयोग को हासिल करने के लिए इस संगठन के लिये निम्न कुछ लक्ष्यों को स्वीकार किया गया। इनमें, दक्षिण एषियाई क्षेत्र के लोगों के कल्याण में वृद्धि व उनके जीवन स्तर में सुधार करना, इस क्षेत्र में आर्थिक उपज, सामाजिक प्रगति एवं सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के प्रयास करना, इस क्षेत्र के राष्ट्रों के मध्य सामूहिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करनाए आपसी विष्वास एवं समझ का विकास तथा एक–दूसरे की समस्याओं में सहायता करना, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में आपसी सहायता एवं सक्रिय सहयोग का विकास करना, अन्य विकासषील देषों के साथ सम्बन्ध मजबूत बनाने के प्रयास करना, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त हितों के मामलों में आपसी सहयोग को मजबूत बनाना और समान लक्ष्यों एवं उद्देष्यों के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों का सहयोग करना शामिल हैं।

विष्व स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समूची दुनिया में क्षेत्रीय सहयोग के लिए वैष्विक संगठन बने हैं। नाटो हो या ओपेक या फिर ईयू या आसियान, इन सभी प्रमुख क्षेत्रीय संगठनों का उद्देष्य अपने इलाके में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है। इसी आधार पर एक क्षेत्रवादी संगठन के रूप में सार्क के 8 संस्थापक सदस्य देषों ने इस संगठन के अन्तर्गत आपसी राजनैतिक सहयोग की आधार षिला पर इसकी स्थापना की। इसमें इन देषों के मध्य सांस्कृतिक विकास के लिए सांस्कृतिक सम्पर्क एवं एक–दूसरे के देषों के लोगों की आवाजाही को प्रोत्साहन दिये जाने की बातें कही जाती रही हैं लेकिन वास्तव में दक्षिण एषिया की समूची राजनीति बहुत जटिल है। यहां अधिकांष सार्क देषों के बीच ऐसा आवागमन प्रायः कम दिखाई देता है। तकनीकी के आदान–प्रदान के स्तर पर भी देखें तो सार्क दूसरे सहयोगी संगठनों की तुलना में बहुत प्रभावी नहीं दिखलाई पड़ता। सार्क देषों के बीच तकनीकी व वैज्ञानिक क्षेत्रों में आपसी सहयोग व सक्रिय सहायता के उदाहरण कम ही दिखाई पड़ते हैं। इस दिषा में सार्क संगठन की सक्रियता भी कम ही दिखाई देती है।

सार्क देषों द्वारा भी अपनी आर्थिक सषक्तिकरण की दिषा में जो कदम उठाये गये हैं वे इस क्षेत्र में कम प्रभावी दिखते हैं। यहां अधिकत देष विकसषील हैं। इनके बीच प्रभावी आर्थिक आदान–प्रदान नहीं दिखलाई पड़ता है। इस क्षेत्र में आंतकवाद एक बड़ी समस्या है। वास्तव में यह एक ऐसा भयावह विषय जिससे आज विष्व के सभी देष परेषान हैं। आंतकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए सार्क के सभी सदस्य देषों को मिल–जुल कर सहयोग करना चाहिए। इसी हेतु सार्क देषों द्वारा आपवसी संवाद को बढ़ाना आवष्यक है। इस पूरे इलाके में सामाजिक क्षेत्र में देखें तो गरीबी उन्मूलन, जनसंख्या स्थिरीकरण, महिला विकास और

सषक्तिकरण, युवाओं के विकास, स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्रों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयास होने चाहिए। पर्यावरण जैसे गंभीर और संवेदनषील मुद्दों पर सार्क के बीच सक्रिय सहयोग बढ़ना चाहिए। यह सभी मुद्दे ऐसे हैं जिनमें सार्क देषों के बीच संवाद के जरिये कुछ बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं।

सार्क को बदलते परिवेश और परिस्थितियों के अनुकल प्रभावी रणनीति बनाकर सदस्य देशों के बीच भरोसा और सहयोग कायम करना होगा। सार्क देशों की बहुलता वाले इस इलाके में इस संगठन का एकमात्र गैरसदस्य देश चीन है। चीन, दक्षिण एशियाई में क्षेत्र में अतिसक्रिय रहता है। भारत और चीन दोनों ही तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाएं हैं। लेकिन चीन की अतिमहत्वकांक्षा और कूटनीति समूचे सार्क देशों के आपसी संबंधों को पटरी पर लाने में एक खास किस्म की बाधा है। इसके अलावा सार्क क्षेत्र में लगातार राजनैतिक तनातनी के चलते भी सहयोग की भावना कमजोर होती रहती है। चीन अनेक तरीकों से दक्षिण एशिया में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयास करता है। दरअसल चीन दुनिया के कई देशों को कर्ज देता है जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है। इस पूरे इलाके में चीन को चुनौती देने वाला एकमात्र देश भारत है। इसी कारण पाकिस्तान को भारत के विरूद्ध चीन लंबे समय से इस्तेमाल करता रहा है।

हाल ही में नेपाल से भी चीन की नजदीकियां बढ़ी हैं। भारत के पड़ोसी देशों में अपना हस्तक्षेप बढ़ाकर चीन अक्सर उन्हें भारत के खिलाफ इस्तेमाल करने की कूटनीतिक चालें चलता रहता है। चीन बांग्लादेश और श्रीलंका आदि देशों में भी सक्रिय है। इस तरह दक्षेस देशों के बीच आपसी तालमेल और सहयोग स्थापित होने में चीन एक बड़ी रूकावट है। चीन, दक्षेस क्षेत्र में अपना दबदबा स्थापित कर यहां की अर्थव्यवस्था पर अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है। सार्क के अधिकतर सदस्यों के बीच आपसी सहयोग बढ़ाकर चीन की इस कूटनीतिक रणनीति का सामना किया जा सकता है।

सार्क के समक्ष कई बड़ी चुनौतियां हैं। इस संगठन को चाहिए कि वह इस क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने का एजेंडा सेट करे। ऐजेंडा सेटिंग एक विषेष तरह की प्रक्रिया है जिसमें जनमाध्यम कुछ मुद्दों को बार–बार और प्रमुखता से प्रचारित और प्रसारित करते हैं। वे यह तय करवाने का प्रयास करते हैं कि जनता किन मुद्दों को सबसे महत्वपूर्ण मानती है या मानेगी। एक तरह से यह मीडिया द्वारा सार्वजनिक एजेंडा प्रभावित करने का प्रयास होता है। मीडिया का यह सिद्धांत बताता है कि जनता को क्या सोचना है। यह एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जहाँ मीडिया कवरेज की आवृत्ति और प्रमुखता दर्शकों की याददाश्त में मुद्दों को सुलभ बनाती है, जिससे वे उन मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। सार्क देषों का मीडिया सहयोग को बढ़ावा देने का ऐजेंडा सेट कर एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

निष्कर्ष और सुझाव

सार्क के सदस्य देशों को समझना नितांत आवश्यक है कि वैश्वीकरण के इस दौर में आपसी सहयोग से ही शांति और समृद्धि हासिल की जा सकती है। इस पूरे क्षेत्र को अगर हम देखें तो सार्क सदस्यों के बीच निरंतर बेहतर संवाद की बहुत बड़ी कमी दिखती है। मौजूदा परिस्थितियों में दक्षेस देशों के बीच समन्वय और बेहतर संवाद स्थापित करने में सार्क की भूमिका बढ़ जाती है। सार्क को इस दिशा में पहल करनी ही चाहिए। सार्क से अपने सहयोगी देशों के बीच राजनैतिक,आर्थिक, सांस्कृतिक और कूटनीतिक संबंधों को बेहतर करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता है। सार्क की प्रासंगिकता इसी में है कि वह दक्षेस के इलाके में सद्भाव पैदा करे। आने वाले बेहतर कल के लिए सार्क जैसे महत्वपूर्ण संगठन को संवाद, सहयोग, समन्वय सद्भाव की नई व्यापक रणनीतियों पर सक्रियता से काम करने की आवश्यकता है।

दक्षेस को इस दिशा में निणर्यकारी और नेतृत्वकारी भूमिका में काम करना होगा। वह इस समूचे इलाके में सहयोग और विकास का एक ऐजेंडा सेट कर सकता है। जनसहयोग और जनसंपर्क के जरिये

सार्क इस क्षेत्र में सौहार्द और शांति बहाली के प्रयास कर मौजूदा परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण प्रयास कर सकता है। दक्षेस एक सहयोगी संगठन के रूप में इस इलाके में सदस्यों के बीच संवाद को मजबूत कर सकता है और विकास तथा शांतिपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने का आवष्यक कार्य कर सकता है।

संदर्भ सूची

1- Sudhakar E, 2009, *SAARC Origin Growth and Future*,Gyan Publishing House, Delhi, P-21,48.

2- Dipankar Banerjee, *Ed. 2002, SAARC in the 21st Century Towards a Cooperative Future*, India Research Press, Delhi, P-5,181.

3- Goel O.P., *Ed.* 2004, *India and SAARC Engaments*, Isha Books, Delhi,P,429, 534.

4- Mc Nair Brian, 1995, *An Introdcuction to Political Communication,*Routledge London, 35, 75.

5- Kumar Keval J.,2005, *Mass Communication in* IindiaJaico Publication Mumbai, 21, 38,45.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM